दीपावली की कथा और शुभकामनाएँ

यह पारम्परिक कथा मैं हर दिवाली की पूजा के बाद अपने परिवार को सुनाता हूँ । आज आपको सुनाता हूँ । शायद आपने भी यह कथा सुनी होगी । पर मुझे यह कहानी इतनी पसंद है कि मैं इसे बार-बार सुनाता हूँ और हर बार मुझे कुछ नया सीखने को मिलता है। यदि आपको भी इस कहानी से कुछ नया सीखने को मिले तो मुझे अवश्य बताइएगा ।

एक बार की बात है एक गाँव में एक बुढ़िया अपने सात पुत्रों के साथ रहती थी। सब भाई आपस में झगड़ते रहते थे । वे बहुत गरीब थे। सब अलग अलग भोजन बनाते थे। एक एक करके भाइयों की शादी हो रही थी। जब सबसे छोटे की शादी हुई तो जो बहू आयी वह बहुत समझदार थी । छोटी बहू ने आते ही सबसे पहले सब भाइयों के जो अलग अलग चूल्हे थे वो तोड़ दिए और कहा कि अब सब भाइयों का भोजन एक साथ एक ही चूल्हे पर बनेगा। उसके बाद उसने सब भाइयों को कहा कि हर भाई शाम को घर लौटते हुए कुछ ना कुछ अपने साथ अवश्य लेकर आएगा। एक दिन उसका पति अर्थात सबसे छोटा बेटा दिन भर घूमता रहा पर उसे कोई काम नहीं मिला । वह शाम को निराश घर लौट रहा था तो उसे एक मरा हुआ साँप दिखा । उसने सोचा कि पत्नी ने कुछ ना कुछ लाने को कहा था तो आज यह मरा हुआ साँप ही सही । उसने उस मरे हुए साँप को उठा लिया और घर ला कर अपनी पत्नी को दे दिया । पत्नी ने साँप लिया और अपनी झोपड़ी की छत पर दाल दिया ।

 © All Rights Free

उधर रानी नदी पर नहाने गयी थी । वहाँ रानी का नवलखा हार चोरी हो गया था । राजा ने मुनादी पिटवा कर घोषणा करवा दी कि जो भी नवलखा हार ला कर देगा उसे वह मुंहमागी मुराद देगा । वास्तव में वह हार नदी किनारे से एक चील ने उठा लिया था । चील अपनी चोंच में हार उठा कर उड़ती जा रही थी कि उसने बुढ़िया की झोपड़ी पर मरा हुआ साँप देखा । चील ने हार झोपड़ी की छत पर छोड़ दिया और वह मरा हुआ साँप ले कर उड़ गयी । बुढ़िया ने छत पर हार देखा तो वह समझ गयी कि यह रानी का नवलखा हार है । बुढ़िया ने अपनी छोटी बहू को यह बताया तो बहू ने उसे राजा के दरबार में जाने को कहा और साथ ही यह भी बताया कि राजा से क्या माँगना है । बुढ़िया राजा के दरबार में गयी और हार राजा को दे दिया । राजा हार पा कर प्रसन्न हो गया और उसने बुढ़िया से अपनी मुराद माँगने को कहा।

बुढ़िया ने अपनी छोटी बहू की सलाह के अनुसार राजा से कहा कि आने वाले कार्तिक माह की अमावस्या को किसी और के घर दीपक ना जले केवल उनके घर रोशनी हो । राजा ने बुढ़िया की मांग के अनुसार आदेश दे दिया और घोषणा करवा दी । कहा जाता है कि कार्तिक माह की अमावस्या को लक्ष्मी जी विचरण करने निकलती हैं। बुढ़िया ने अपनी सब बहुओं की मदद से अपने घर की बहुत अच्छे से सफाई की, सजावट की और दीपों से सजाया।

 © All Rights Free

लक्ष्मी जी विचरण करने निकली तो सब ओर अन्धेरा था । केवल बुढ़िया का घर जगमगा रहा था । लक्ष्मी जी उनके घर आ गयी और साफ़-सफाई तथा सजावट देखकर प्रसन्न हो गयी । लक्ष्मी जी ने बुढ़िया से वर माँगने को कहा । बुढ़िया ने अपनी छोटी बहू से चर्चा कर पहले ही तय कर रखा कि क्या माँगना है । बुढ़िया ने लक्ष्मी जी से कहा कि यदि आप हम पर प्रसन्न हैं तो वर दें कि मैं अपनी आँखों से अपने पोते-पोतियों को हँसी-खुशी सोने-चाँदी के बर्तनों में दूध-दही खाते देखूँ । लक्ष्मी जी मुस्कुरायी । वे समझ गयी कि इस बुढ़िया ने समझदारी से एक बार में ही सब कुछ माँग लिया। लक्ष्मी जी ने उसे वर दिया । उसके बाद से बुढ़िया और उसके परिवार की गरीबी दूर हो गयी और वे सदा सुख से रहे ।

कथा बहुत सरल है परन्तु अत्यंत सारगर्भित है । इससे हमें बहुत सी बातों की सीख मिलती है। कुछ जिन्हें मैं समझ पाया हूँ वे निम्नानुसार हैं -

- एक स्त्री अपनी समझदारी से घर में सुख-समृद्धि ला सकती है ।

 © All Rights Free

- घर की समृद्धि के लिए सब को मिल कर रहना चाहिए और एक दूसरे की सलाह से कार्य करना चाहिए ।

- यदि कोई छोटा भी समझदारी की बात करे तो उस पर ध्यान देना चाहिए । बड़ों को अपने बड़े होने का अहंकार नहीं करना चाहिए ।

- हर व्यक्ति को प्रति दिन धनोपार्जन के लिए कुछ प्रयास अवश्य करना चाहिए ।

- कभी किसी वस्तु को अनुपयोगी नहीं समझना चाहिए। कभी कभी मरे हुए साँप से भी भाग्य का दरवाजा खुल जाता है ।

- कई बार जीवन में ऐसा समय आता है कि व्यक्ति सारे प्रयासों के बावजूद कुछ नहीं कमा पाता। उसके हाथ केवल एक बेकार सा लगने वाला मरा हुआ साँप आता है । ऐसी परिस्थिती में भी घर वालों को व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ना चाहिए और जो मिला है उसी को सहर्ष शिरोधार्य करना चाहिए।

- बुढ़िया ने लक्ष्मी जी से केवल धन दौलत नहीं माँगी । उसने हँसते खेलते पोता-पोती भी माँगे। वास्तव में असली धन तो किसी भी व्यक्ति का परिवार है। स्वस्थ बच्चे परिवार का सबसे बड़ा धन होते हैं।

- बुढ़िया ने माँगा की वह अपने पोते-पोतियों को देखे अर्थात उसने अपने लिए दीर्घायु और अच्छा स्वास्थ्य भी मांग लिया । जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण सुख निरोगी काया है। बीमार व्यक्ति कोई सुख नहीं भोग सकता ।

- बुढ़िया और उसकी छोटी बहू ने कभी यह नहीं सोचा कि नवलखा हार राजा को देने की जगह खुद ही रख लें । बेईमानी और चोरी से कभी शुभ नहीं हो सकता । उन्होंने रानी का हार लौटा कर केवल उतना लिया जो राजा और प्रभु ने उन्हें सहर्ष दिया । उससे अधिक लेने का प्रयास करना लोभ की श्रेणी में आता। उन्होंने लोभ नहीं किया क्योंकि लोभ से तात्कालिक लाभ तो मिल सकता है पर परिवार की सुख, शान्ति समृद्धि नहीं आ सकती ।

 © All Rights Free

- जीवन में व्यक्ति को सब कुछ चाहिए होता है । निरोगी काया , सोना-चाँदी , दूध-दही , घर-परिवार , बच्चे , पोते-पोतियां , आपसी समझ, घर की शांति - इनमें किसी एक के भी नहीं रहने पर जीवन निरर्थक प्रतीत होने लगता है । इन सब की प्राप्ति के लिए लक्ष्मी जी की कृपा आवश्यक है । परन्तु उनकी कृपा होने के पूर्व हमें अपने हिस्से के कार्य करने होंगे ।

आज दीपावली के शुभ अवसर पर मैंने आपको यह कथा अनंत शुभकामनायों के साथ सुनायी है । आशा करता हूँ कि आपको इस पारंपरिक कथा से वो शुभ शिक्षाएँ भी प्राप्त होंगी जो मैं अपनी सीमित बुद्धि के कारण ग्रहण नहीं कर पाया । कथा की शिक्षा से आपके सोच और जीवन में जब परिवर्तन आएंगे तो लक्ष्मी जी की कृपा तो बरसेगी ही । आपके जीवन में भी वैसे ही लक्ष्मी जी कृपा हो जैसी उस गरीब बुढ़िया पर हुई - यही प्रार्थना है ।

अनिल चावला

दीपावली

३० अक्टूबर २०१६

 © All Rights Free